5 सदाचार का तावीज़

तावीज़ बाँधकर आदमी को ईमानदार बनाने की कोशिश की जा रही है। लेखक का मानना है कि किसी को सदाचारी तभी बनाया जा सकता है जब भ्रष्टाचार के मौके खत्म हों, कर्मचारियों को आर्थिक सुरक्षा मिले। केवल भाषणों, सर्कुलरों, उपदेशों, सदाचार समितियों, निगरानी आयोगों के असर से कर्मचारी सदाचारी नहीं बन सकते। यदि यह संभव होता तो इस एकांकी के राजा को वह मंज़र न देखना पड़ता।

पात्र : **राजा, मंत्री, दरबारी-1, दरबारी-2, दरबारी-3, विशेषज्ञ - 1, विशेषज्ञ-2, विशेषज्ञ-3, साधु, कुछ राज-कर्मचारी और आमजन**
सूत्रधार - (यह मंच पर नहीं आएगा, इसकी केवल आवाज़ सुनाई देगी।)

दृश्य - 1

(राज-दरबार लगा है। सिंहासन पर राजा बैठा है। उसकी बाईं ओर मंत्री और एक दरबारी बैठा है। इसी तरह राजा के दाईं ओर दो अन्य दरबारी बैठे हैं।)

राजा : प्रजा बहुत हल्ला मचा रही है कि सब जगह भ्रष्टाचार फैला हुआ है। हमें तो आज तक कहीं नहीं दिखा। तुम लोगों को कहीं दिखा हो तो बताओ।

(तीनों दरबारी 'ना में' (असहमति सूचक) गरदन हिलाते हैं।)

मंत्री : जब हुजूर को नहीं दिखा तो हमें कैसे दिख सकता है?

राजा : तुम लोग सारे राज्य में ढूँढ़कर देखो कि कहीं भ्रष्टाचार तो नहीं है! अगर कहीं मिल जाए तो हमारे देखने के लिए नमूना लेते आना। हम भी तो देखें कि कैसा होता है।

दरबारी 1 : हुजूर, वह हमें नहीं दिखेगा। सुना है, वह बहुत बारीक होता है। हमारी आँखें आपकी विराटता देखने की इतनी आदी हो गई हैं कि हमें बारीक चीज नहीं दिखती। हमें भ्रष्टाचार दिखा भी तो उसमें हमें आपकी ही छवि दिखेगी, क्योंकि हमारी आँखों में तो आपकी ही सूरत बसी हुई है।

दरबारी 2 : महाराज, अपने राज्य में एक जाति रहती है, जिसे 'विशेषज्ञ' कहते हैं। इस जाति के पास कुछ ऐसा अंजन होता है कि उसे आँखों में आँजकर वे बारीक चीज भी देख लेते हैं।

दरबारी 3 : महाराज, हमारा निवेदन है कि इन विशेषज्ञों को ही हुजूर भ्रष्टाचार ढूँढ़ने का काम सौंपें।

राजा : मंत्री! दरबार में ऐसे विशेषज्ञ हाजिर करो! हम भी उन्हें देखना चाहते हैं।

मंत्री : जो आज्ञा, महाराज।

(मंत्री और तीनों दरबारियों का राजा को सलाम करते हुए मंच से प्रस्थान। राजा किसी सोच में डूबा हुआ बैठा रहता है। मंत्री तीन नए लोगों के साथ दरबार में फिर हाजिर होता है। तीनों राजा को सलाम करके दरबारियोंवाले आसनों पर बैठ जाते हैं।)

राजा : सुना है, हमारे राज्य में भ्रष्टाचार है। पर वह कहाँ है, यह पता नहीं चलता। तुम लोग उसका पता लगाओ। अगर मिल जाए तो पकड़कर हमारे पास ले आना। अगर बहुत हो तो नमूने के लिए थोड़ा-सा ले आना।

तीनों : जो आज्ञा, महाराज।

(तीनों विशेषज्ञों का मंत्री के साथ दरबार से प्रस्थान। राजा उदासीन-सा बैठा रहता है।)

सूत्रधार : विशेषज्ञों ने उसी दिन से भ्रष्टाचार की छान-बीन शुरू कर दी। दो महीने बाद वे फिर से दरबार में हाजिर हुए।

(मंत्री और तीनों विशेषज्ञों का मंच पर आगमन। एक विशेषज्ञ के हाथों में कागजों का एक पुलिंदा है।)

राजा : विशेषज्ञो, तुम्हारी जाँच पूरी हो गई? क्या तुम्हें भ्रष्टाचार मिला? लाओ, मुझे दिखाओ। देखूँ, कैसा होता है!

विशेषज्ञ 1 : हुजूर, वह हाथ की पकड़ में नहीं आता। वह स्थूल नहीं, सूक्ष्म है। वह अगोचर है, पर वह सर्वत्र व्याप्त है। उसे देखा नहीं जा सकता, अनुभव किया जा सकता है।

584/216/2087

राजा : *(कुछ सोचते हुए)* विशेषज्ञो, तुम कहते हो कि वह सूक्ष्म है, अगोचर है और सर्वव्यापी है। ये गुण तो ईश्वर के हैं। तो क्या भ्रष्टाचार ईश्वर है?

विशेषज्ञ 2 : हाँ महाराज, अब भ्रष्टाचार ईश्वर हो गया है।

दरबारी 1 : पर वह है कहाँ? कैसे अनुभव होता है?

विशेषज्ञ 3 : वह सर्वत्र है। वह इस भवन में है। वह महाराज के सिंहासन में है।

राजा : *(उछलकर सिंहासन से दूर खड़े होते हुए)* इस सिंहासन में है?

विशेषज्ञ 1 : हाँ सरकार, सिंहासन में है। पिछले माह इस सिंहासन पर रंग करने के जिस बिल का भुगतान किया गया है, वह बिल झूठा है। वह वास्तव में दुगने दाम का है। आधा पैसा बीचवाले खा गए। आपके पूरे शासन में भ्रष्टाचार है और वह मुख्यत: घूस के रूप में है।

सूत्रधार : विशेषज्ञों की बात सुनकर राजा चिंतित हुए और दरबारियों के कान खड़े हुए।

राजा : यह तो बड़ी चिंता की बात है। हम भ्रष्टाचार बिलकुल मिटाना चाहते हैं। विशेषज्ञो, तुम बता सकते हो कि वह कैसे मिट सकता है?

विशेषज्ञ 2 : हाँ महाराज, हमने उसकी भी योजना तैयार की है। भ्रष्टाचार मिटाने के लिए महाराज को व्यवस्था में बहुत परिवर्तन करने होंगे। एक तो भ्रष्टाचार के मौके मिटाने होंगे। जैसे ठेका है तो ठेकेदार है। और ठेकेदार है तो अधिकारियों की घूस है। ठेका मिट जाए तो उसकी घूस मिट जाए। इसी तरह और बहुत-सी चीज़ें हैं। किन कारणों से आदमी घूस लेता है, वह भी विचारणीय है।

राजा : अच्छा, तुम अपनी पूरी योजना रख जाओ। हम और हमारा दरबार उसपर विचार करेंगे।

(राजा के सामने कागज़ों का एक पुलिंदा रखकर तीनों विशेषज्ञों का प्रस्थान। राजा उन कागज़ों को उलट-पलटकर देखता है, फिर मंत्री, फिर तीनों दरबारी।)

सूत्रधार : राजा और दरबारियों ने भ्रष्टाचार मिटाने की योजना को पढ़ा। उसपर विचार किया। यकायक राजा का स्वास्थ्य बिगड़ने लगा।

दरबारी 1 : महाराज, चिंता के कारण आपका स्वास्थ्य बिगड़ता जान पड़ रहा है। उन विशेषज्ञों ने आपको झंझट में डाल दिया।

राजा : हाँ, मुझे लगता है, आज रात नींद भी नहीं आएगी।

दरबारी 2 : ऐसी रिपोर्ट को आग के हवाले कर देना चाहिए, जिससे महाराज की नींद में खलल पड़े।

राजा : तुम लोगों ने भी भ्रष्टाचार मिटाने की योजना का अध्ययन किया है। तुम्हारा क्या मत है? क्या उसे काम में लाना चाहिए?

मंत्री : महाराज, यह योजना क्या है, एक मुसीबत है। इसके अनुसार कितने उलट-फेर करने पड़ेंगे। कितनी परेशानी होगी। सारी व्यवस्था उलट-पलट जाएगी। जो चला आ रहा है, उसे बदलने से नई-नई कठिनाइयाँ पैदा हो सकती हैं। हमें तो कोई ऐसी तरकीब चाहिए जिससे बिना कुछ उलट-फेर किए भ्रष्टाचार मिट जाए।

राजा : मैं भी यही चाहता हूँ। पर वह हो कैसे? हमारे प्रपितामह को तो जादू आता था, हमें तो वह भी नहीं आता। तुम लोग ही कोई उपाय सोचो।

मंत्री : महाराज, यह काम आप मुझपर छोड़िए और जाकर चैन की नींद सोइए।

(राजा, मंत्री और तीनों दरबारियों का मंच से प्रस्थान। कुछ देर बाद राजा का पुनः आगमन।)

सूत्रधार : इस प्रकार कई दिन बीत गए, पर कोई हल न निकला।

(मंच पर मंत्री, तीनों दरबारियों और एक साधु का प्रवेश)

सूत्रधार : एक दिन दरबारियों ने राजा के सामने एक साधु को पेश किया।

मंत्री : महाराज, एक कंदरा में तपस्या करते हुए इन महान साधक को हम ले आए हैं। इन्होंने सदाचार का तावीज़ बनाया है। वह मंत्रों से सिद्ध है और उसको बाँधने से आदमी एकदम सदाचारी हो जाता है।

(साधु अपने झोले से एक तावीज़ निकालकर राजा को देता है।)

राजा : *(तावीज़ को उलट-पुलटकर देखते हुए)* हे साधु, इस तावीज़ के विषय में मुझे विस्तार से बताओ। इससे आदमी सदाचारी कैसे हो जाता है?

साधु : महाराज, भ्रष्टाचार और सदाचार मनुष्य की आत्मा में होता है। बाहर से नहीं होता। विधाता जब मनुष्य को बनाता है, तब किसी की आत्मा में ईमान की कल फिट कर देता है और किसी की आत्मा में बेईमानी की। इस कल में से ईमान या बेईमानी के स्वर निकलते हैं जिन्हें 'आत्मा की पुकार' कहते हैं। आत्मा की पुकार के अनुसार ही आदमी काम करता है। अभी मैंने यह सदाचार का तावीज़ बनाया है। जिस आदमी की भुजा पर यह बँधा होगा, वह सदाचारी हो जाएगा। मैंने कुत्ते पर भी प्रयोग किया है। यह तावीज़ गले में बाँध देने से कुत्ता भी रोटी नहीं चुराता। यही इस तावीज़ का गुण है, महाराज।

(दरबार में कानाफूसी होती है। दरबारी और मंत्री भी उठ-उठकर तावीज़ को देखते हैं।)

राजा : *(खुश होकर)* मुझे नहीं मालूम था कि मेरे राज्य में ऐसे चमत्कारी साधु भी हैं। मगर हमें लाखों नहीं, करोड़ों तावीज़ चाहिए। हम राज्य की ओर से तावीज़ों का एक

कारखाना खोल देते हैं। आप उसके जनरल मैनेजर बन जाएँ और अपनी देख-रेख में बढ़िया तावीज़ बनवाएँ।

मंत्री : महाराज, राज्य क्यों इस झंझट में पड़े? मेरा तो निवेदन है कि साधु बाबा को ठेका दे दिया जाए। ये अपनी मंडली से तावीज़ बनवाकर राज्य को सप्लाई कर देंगे।

(राजा के संकेत पर मंत्री ने साधु को एक चेक थमाया। सबका मंच से प्रस्थान)

सूत्रधार : राजा को यह सुझाव पसंद आया। साधु को तावीज़ बनाने का ठेका दे दिया गया। उसी समय उन्हें पाँच करोड़ रुपये कारखाना खोलने के लिए पेशगी मिल गए। राज्य के अखबारों में खबरें छपीं — सदाचार के तावीज़ की खोज। तावीज़ बनाने का कारखाना खुला।

दृश्य - 2

(मंच पर कुछ आमजन इधर-उधर बैठे कुछ लिख-पढ़ रहे हैं।)

सूत्रधार : लाखों तावीज़ बन गए। सरकार के हुक्म से हर सरकारी कर्मचारी की भुजा पर एक-एक तावीज़ बाँध दिया गया। भ्रष्टाचार का ऐसा सरल हल निकल आने से राजा और दरबारी सब खुश थे।

(मंत्री का मंच पर आगमन। वह अखबार पढ़ते पात्रों के हाथ पर तावीज़ बाँधता है। मंत्री का प्रस्थान, बदले हुए वेष में राजा का आगमन)

राजा : *(अपने-आप से)* देखें तो यह तावीज़ कैसे काम करता है!

(राजा काम में जुटे कर्मचारियों में से एक के पास जाता है।)

राजा : *(कर्मचारी के कान में कुछ कहते हुए)* यह लीजिए पाँच का नोट और मेरा काम कर दीजिए।

कर्मचारी : *(डपटते हुए)* भाग जाओ यहाँ से! घूस लेना पाप है।

राजा : *(मन ही मन खुश होता हुआ)* भूल हो गई साहब, फिर कभी ऐसा नहीं होगा।

सूत्रधार : राजा यह देखकर बहुत खुश हुए कि तावीज़ ने कर्मचारी को ईमानदार बना दिया था।

(राजा का प्रस्थान। कर्मचारी काम में जुटे हैं। राजा का फिर एक और वेष में आगमन)

सूत्रधार : कुछ दिन बाद राजा फिर वेश बदलकर उसी कर्मचारी के पास गए। उस दिन इकतीस तारीख थी — महीने का आखिरी दिन।

राजा : *(पाँच का नोट देते हुए)* हुज़ूर, आज तो मेरा काम कर दीजिए।

कर्मचारी : *(नोट लेकर जेब में रखते हुए)* चलो, तुम भी क्या याद करोगे!